PAGE NO.:
DATE: / /

2- उपकरण- प्रदर्शन के पूर्व नियोजन एवं प्रस्तुतीकरण में उपकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रदर्शन में जिन विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया जाय वे आकार में बड़े हो तथा उनको पूर्व में भली-भाँति परीक्षण करके देख लेना चाहिए कि वे ठीक प्रकार से कार्य कर रहे हैं अथवा नहीं। उपकरण के विभिन्न पुर्जों की आयलिंग कर देनी चाहिए। विद्युत उपकरणों के तार के कनेक्शन देख लेने चाहिए। कौन से उपकरण किस स्थान पर रखे जाये इसका नियोजन भी पूर्व में ही कर लेना चाहिए। सफल एवं कुशल प्रदर्शन के लिए उपयुक्त उपकरण उपयुक्त स्थान पर, उपयुक्त समय पर रखे जाने चाहिए।

3- विस्तृत नियोजन- किसी प्रदर्शन को देने से पूर्व उसकी विस्तृत योजना आवश्यक है। नियोजन के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्यों को दृष्टिगत रखना चाहिए-

1- कक्षा की छात्राओं की पृष्ठभूमि, उनकी मानवीय क्षमताएँ, रुचियाँ।
II- प्रदर्शन हेतु समयावधि की आवश्यकता।
III- प्रदर्शन के लिए समय की योजना का निर्माण।
IV- प्रदर्शन विधि में किसी सहायक की आवश्यकता हो तो उसके कार्यों का निर्धारण।

V- प्रदर्शन हेतु आवश्यक वस्तुओं एवं साज सामग्री की व्यवस्था।

VI- प्रारम्भिक तैयारी के लिए कार्यकारी योजना का निर्माण।

4- पूर्व तैयारी - पूर्व तैयारी के लिए कितने समय की आवश्यकता होगी। यह प्रदर्शन की प्रकृति पर निर्भर करेगा। सामान्यतः पूर्व तैयारी के लिए 2 से 4 घंटे की आवश्यकता होती है। पूर्व तैयारी के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए -

I- उपकरणों को भली प्रकार परीक्षण करके यथास्थान रखना चाहिए।

II- प्रदर्शन में प्रयुक्त की जाने वाली कच्ची सामग्री प्रदर्शन के समय प्रदर्शन स्थल के समीप उपलब्ध होनी चाहिए।

III- प्रदर्शन के पूर्व जिन प्रक्रियाओं को करना आवश्यक हो, उन्हें पूर्व में ही सम्पन्न कर लेना चाहिए।

5- तैयार आदर्श सामग्री का प्रदर्शन - तैयार की गयी वस्तु का प्रदर्शन सुव्यवस्थित, सुनियोजित एवं प्रभावी ढंग से होना चाहिए। यह प्रदर्शन प्रोत्साहन मार्गदर्शन एवं आदर्श का कार्य करता है। प्रदर्शित की जाने वाली वस्तु आदर्श एवं अनुकरणीय हो तथा उसे कक्षा में ऐसे

स्थान पर प्रदर्शित किया जाएँ जहाँ से कक्षा की सभी छात्राओं को दिखाई दे सके। इस कार्य के लिए मेज उपयुक्त व सुसज्जित होनी है।

छात्राएँ - कक्षा की छात्राएँ - ग्रामीण, शहरी, शिक्षित, अशिक्षित, पृष्ठभूमि की हो सकती हैं। कक्षा में छात्राओं की संख्या कम या अधिक हो सकती है। उनका बौद्धिक स्तर सामान्य से निम्न स्तर से लेकर प्रतिभाशाली तक हो सकता है। यदि छात्राएँ कम है तो छोटे कक्ष में औपचारिक ढंग से प्रदर्श प्रस्तुत किया जा सकता है। परन्तु यदि छात्राओं की संख्या अधिक है तो बड़े कक्ष की आवश्यकता होगी। कुछ छात्राएँ प्रदर्श के मध्य प्रश्न पूछना चाहेगी उन्हें इसका अवसर दिया जाना चाहिए। तथा शिक्षिका को उन्हें उनके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि छात्राओं के चेहरे पर चिंता या आशंका के भाव प्रदर्शित हो या वे आपस में बातें कर रही हो तो उसका कारण ज्ञात करके उसको दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

प्रस्तुतीकरण की प्रविधियाँ - उत्तम एवं प्रभावपूर्ण प्रस्तुतीकरण के लिए शिक्षिका को निम्नलिखित प्रविधियों में कुशलता प्राप्त करना आवश्यक है -

I- प्रदर्श की प्रत्येक क्रिया, उपक्रिया एवं प्रक्रिया कक्षा की समस्त छात्राओं को दिखाई दे। यदि छात्राएँ प्रदर्श न देख पायेगी तो उनकी रुचि क्षीण हो जायेगी व ध्यान बिखरने लगेगा।

II- प्रदर्श के पश्चात मेज को साफ कर देना चाहिए।

3- प्रदर्श के मध्य शिक्षिका को व्यक्तिगत संकेतों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

4- प्रदर्श की एक उपक्रिया से दूसरी उपक्रिया को परिवर्तित करने से कार्य में रोचकता उत्पन्न की जाए न कि केवल यह कहा जाय कि - "आगे यह करेंगे।"

5- कोई दूसरा वाक्य या विचार प्रस्तुत करने से पूर्व पहले के वाक्य या विचार को पूरा करना चाहिए।
6- कक्षा में जब एक स्थान से दूसरे स्थान को गति कर रहे हो या अधिक शोर करने वाले उपकरण का प्रयोग कर रहे हो तो प्रवचन देना बन्द कर देना चाहिए।
7- जब तक प्रदर्शन पूर्ण न हो जाय तब तक आवश्यक बातचीत करना बन्द नहीं करना चाहिए अन्यथा छात्राओं की रुचि समाप्त हो जायेगी।

प्रदर्शन विधि के गुण- प्रदर्शन-पद्धति व्यवहारिक विषय का ज्ञान देने के लिए सबसे सस्ती विधि है। इससे समय की बचत होती है। सभी विद्यार्थी एक ही प्रयोग एवं एक ही प्रक्रिया को देखने का अवसर पाते हैं। प्रारम्भिक और माध्यमिक कक्षाओं के लिए यह विधि अधिक उपयुक्त है, क्योंकि शिक्षिका की योग्यता और ज्ञान छात्राओं की अपेक्षा अधिक होता है। शिक्षिका प्रदर्शन के प्रत्येक सोपान की व्याख्या करती चलती है, इससे प्रत्येक छात्रा सम्पूर्ण प्रक्रिया को एक ही रूप में देखती है और उससे एक ही अर्थ ग्रहण करती हैं। गृह-विज्ञान जैसे व्यापक विषय के शिक्षण में यह विधि उपयोगी अवश्य है, परन्तु दोष रहित नहीं है।

दोष- नीचे इसके कुछ दोष दिये जा रहे हैं—

I- इस विधि से शिक्षण किये जाने पर छात्राओं को गृह सम्बन्धी उपकरण स्वयं प्रयोग में लाने का पर्याप्त समय नहीं मिलता है। इससे उनमें पूर्णतः आत्मविश्वास का विकास नहीं हो पाता।

II- इस विधि में यह ही मानकर कार्य किया जाता है कि सब विद्यार्थी प्रदर्शन के प्रत्येक भाग को समान रूप से सुनते और देखते हैं। परन्तु प्रायः ऐसा नहीं होता है।

प्राचार्य

छोटी कक्षाओं की छात्राओं की मनोवृत्ति चंचल होती है। वे स्थिरतापूर्वक एक कार्य को काफी देर तक देख या सुन नहीं सकती हैं।

3- गृह-विज्ञान विषय अधिकांशतः क्रियात्मक या कलात्मक है। छात्राओं की इसकी कुशलता प्राप्ति के लिए उसका स्वयं अध्ययन और अभ्यास करना आवश्यक है।

4- कभी-कभी इस विधि का दुरुपयोग होने से इसमें दोष पैदा हो जाते हैं। यदि शिक्षिका प्रदर्शन प्रयोग विधि में कुशल न हो और उसमें आत्म विश्वास का अभाव हो, तब प्रदर्शन कदापि सफल नहीं हो सकता और न बालिकाएँ की रुचि ही विषय की ओर बनी रहेगी। ऐसी दशा में शिक्षिका को छात्राओं का पूर्ण सहयोग भी प्राप्त नहीं हो सकेगा।

यदि इन दोषों का निवारण करते हुए प्रदर्शन विधि को शिक्षण का एक साधन मानकर अध्ययन किया जाय, तब यह शिक्षण-कार्य में बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

30/9/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया